**International Journal of Advanced Educational Research**
**ISSN: 2455-6157; Impact Factor: RJIF 5.12**
**www.educationjournal.org**
**Volume 2; Issue 4; July 2017; Page No. 166-168**

# डॉ0 राम मनोहर लोहिया समाजवाद के नैसर्गिक अध्येता

**अखिलेश त्रिपाठी**

राजनीति विज्ञान विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत।

**प्रस्तावना**

शैशव अवस्था से प्रौढ़ा अवस्था तक अथवा बुद्धि की कोमलता से परिपक्वता तक के सफर में महत्वपूर्ण महापुरूषों एवं कई विचारों ने डॉ0 राम मनोहर लोहिया के समाजवादी चिन्तन को अभिप्रेरित एवं अनुप्राणित किया।

परिवार ममता का मनोरम मंदिर होता है। पिता का स्नेह भरा संरक्षण एवं मां के आंचल तले बालक में बौद्धिकता का अंकुरण होता है। परिवार ही शिशु की प्रथम पाठशाला होती है। बचपन में बालक के मस्तिष्क पर पारिवारिक परिवेश में जिस प्रकार का प्रभाव पड़ता है, वह उसके जीवन के साथ सम्पृक्त हो जाता है। डॉ0 राम मनोहर लोहिया भी इसके अपवाद नहीं थे। डॉ0 राम राम मनोहर लोहिया जब ढाई वर्ष के थे उन्हें मातृविहीनता का आघात सहना पड़ा। सम्भवतः प्रकृति की इस क्रूरता ने डॉ0 राम मनोहर लोहिया को कठोर एवं संघर्षशील बना दिया। मातृविहीनता ने ही मां की ममता से वंचित डॉ0 राम मनोहर लोहिया के हृदय में भारत मां के प्रति अथाह अनुराग से भर दिया। वह भारत को परतंत्राता की बेड़ियों से विमुक्ति के लिए व्याकुल हो उठे। वह भारत की भूखी नंगी जनता के प्रति संवेदनशील हो उठे तथा उसके राजनीतिक समाधान ढूढने में तल्लीन हो गये।

डॉ0 राम मनोहर लोहिया के पिता एक उद्भट्ट देश भक्त तथा गांधीवादी थे पुत्रा पर अपने पिता के व्यक्तित्व एवं विचार का व्यापक प्रभाव पड़ा।[1]

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक भारतीय स्वतंत्राता आन्दोलन के दैदिप्यमान नक्षत्रा थे। स्वतंत्राता के मुक्ति संग्राम का कोई ऐसा सेनानी नहीं था जो तिलक के उग्र एवं दृढ़ राष्ट्रवाद से अनुप्राणित न हुआ हो। ''स्वतंत्राता मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूँगा'', तरूणों में तेजस्विता का संचार करता था।

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक की जब मृत्यु हुई थी तब लोहिया जी बम्बई मे मैट्रिक के छात्रा थे। 1920 में लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक की मृत्यु को उन्होंने गम्भीरता पूर्वक लिया और बम्बई के मारवाड़ी विद्यालय के अपने छात्रा साथियों द्वारा हड़ताल करवा कर उसका नेतृत्व किया। यहीं से डॉ0 राम मनोहर लोहिया के संघर्षमय जीवन का आरम्भ हुआ।[2]

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक की मृत्यु स्वतंत्राता संग्राम के सेनानियों के लिए बज्राघात थी। जैसे भारतीय ओज आज मौन हो गया हो। किशोर डॉ0 राम मनोहर लोहिया को इस घटना ने अन्दर से झकझोर दिया, उन्होंने लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक की मृत्यु को ''महामृत्यु'' की संज्ञा दी।[3]

यह तिलक के प्रभाव का ही प्रतिफल था कि डॉ0 राम मनोहर लोहिया ने राजनीति में प्रवेश किया, राजनीति में उनका यह प्रवेश अपने चिन्तन, मनन एवं कर्म के साथ जीवन पर्यन्त जारी रहा।

विश्व क्रान्ति एवं विश्व बन्धुत्व का जो सपना उन दिनों देखा जा रहा था और भारतीय नेताओं में जिसका स्वर जवाहर लाल नेहरू में सबसे अधिक मुखर था, उसमें डॉ0 लोहिया जैसे तरूण के लिए एक सहज आकर्षण था। नेहरू ने पूर्ण स्वतंत्राता की आवाज उठायी थी और डॉ0 लोहिया के जर्मनी जाने से पूर्व सन् 1929 में नेहरू की अध्यक्षता में ही कांग्रेस ने पूर्ण स्वतंत्राता को अपना लक्ष्य घोषित किया था। इस घटना ने लोहिया के व्यक्तित्व पर अमिट प्रभाव छोड़ा और डॉ0 लोहिया अडिग निश्चय के साथ स्वतंत्राता संग्राम में कूद पड़े। नेहरू के सहृदय एवं संवेदनशील व्यक्तित्व का प्रभाव भी डॉ0 लोहिया के व्यक्तित्व पर पड़ा।[4]

प्रारम्भ में स्वतंत्राता के पूर्व डॉ0 राम मनोहर लोहिया पर पंडित नेहरू का प्रभाव था। लोहिया ने बार–बार कहा है कि वह केवल एक व्यक्ति से प्रभावित रहे हैं, वह गांधी जी हैं, आधा आदमी जिससे वे प्रभावित थे, वह पंडित जवाहर लाल नेहरू हैं, वह आजादी के पहले वाले नेहरू हैं।[5]

कर्म अल्प आयु में ही जीवन को अमरत्व प्रदान करा देता है। किन्तु जीवन निरन्तर जीवित रहने के बावजूद अमरत्व प्रदान नहीं करा पाता। इतिहास पुरूषों का जीवन भी आयु, वर्ष, महीनों से नहीं वरन् उनके निरन्तर कार्यरत रहने से जाना जाता है। ऐसे कर्म जो कीर्तिमान बनकर प्रकाश स्तम्भ सदृश्य दीपमान हो, उनकी पहचान कठिन होती है पर कर्म की प्रखरता काल के वक्ष पर अपना प्रभाव छोड़ जाता है।

गांधी तो कर्म में इतने डूबे हुए व्यक्ति थे कि उन्हें केवल अगला कदम ही दिखता था। और वह अगला कदम इतना दृढ़ और युगान्तकारी था इसके लिए प्रमाण ढूढ़ने की जरूरत नहीं है। वह स्वयम् मील के पत्थर की तरह स्पष्ट है।

डॉ0 राम मनोहर लोहिया एवं महात्मा गांधी में कई बिन्दुओं पर मतभेद भी था यथा गांधी के ट्रस्टीशिप की अवधारणा, परन्तु समाजवादी दल के नेताओं में नरेन्द्र देव तथा जयप्रकाश नारायण पर मार्क्सवाद का सबसे अधिक प्रभाव था। उनकी तुलना में लोहिया पर गांधीवादी विचारधारा का प्रभाव अधिक था।[6]

डॉ0 लोहिया ने बार–बार कहा है कि वह केवल एक आदमी से प्रभावित रहे हैं, वह गांधी के प्रति लोहिया का आकर्षण स्वाभाविक था क्योंकि गांधी केवल जीवन दर्शन के व्याख्याता नहीं थे। वह दर्शन के साथ कर्म को भी जोड़ते थे। गांधी का दर्शन किताबी नहीं था। वह साक्षात कर्म से निःसृत होता था और कर्म की प्रेरणा देता था। कर्म प्रधान होने के नाते वह मूलतः आचरण की कसौटी पर सिद्धान्त को कसता था। डॉ0 लोहिया को लगता था, गांधी जी चाहे जितना सत्य, अहिंसा और धर्म की नितान्त आध्यात्मिक बाते करें, मूलतः अपने लिए भी उन सबको आचरण के स्तर पर ढालते थे, कर्म के स्तर पर साकार करने में विश्वास करते थे।[7]

वस्तुतः महात्मा गांधी एवं डॉ0 लोहिया एक ही कार्यरत जीवन की दो अभिव्यक्तियां हैं।

लेकिन डॉ0 लोहिया का भावुक मन जब भगवान की चर्चा करता है तो राम के रामत्व को राम से बड़ा सिद्ध करता है तथा कृष्ण के कृष्णत्व को कृष्ण से बड़ा मानकर प्रस्तुत करता है। भले ही डॉ0 लोहिया ने कभी किसी ईश्वर के सामने सिर न झुकाया हो लेकिन राम, कृष्ण–शिव लिखने बैठते हैं तो उनके अन्तस्थल की अस्तिकता और उनकी दृष्टि की व्यापकता दोनों ही स्पष्ट रूप से हमारे सामने प्रस्तुत होती है। उनकी भारत माता से प्रार्थना है कि ''हे भारत माता मुझे शिव जैसी विशालता, राम जैसी मर्यादा और कृष्ण जैसा

उन्मुक्त मन दो। उनकी उच्चतम आस्तिकता का परिचय सहज ही मिल जाता है, जिसे वे लाख छिपाना चाहें छिप नहीं सकती।[8]

ग्रन्थ ''राम–कृष्ण एवं शिव'' भारतीयता के प्रति इसी अटूट आस्था का प्रतिफल है। डॉ0 लोहिया गीता, एवं उपनिषदों को भी समादर की दृष्टि से देखते हैं।

यद्यपि भारत की सांस्कृतिक व्यवस्था के कुछ तत्वों का डॉ0 लोहिया ने कटु आलोचना की है यथा जाति व्यवस्था एवं वर्ण व्यवस्था। वह मानते थे कि वर्ण व्यवस्था बल द्वारा निर्मित की गयी एक व्यवस्था है जिसमें गुण–कर्म का कोई मूल्य नहीं है।[9]

राम–कृष्ण एवं शिव के बारे में आध्यात्मिक दर्शन ने डॉ0 लोहिया को कई प्रकार से प्रभावित किया यथा जीवन, समाज के आदर्श निर्धारण में उन्हें उनसे प्रेरणा मिली। इसी प्रकार समाज में व्याप्त विसंगतियों, त्रुटियों अन्यायों को दूर करने के लिए उपयुक्त साधन के चयन निर्धारण में सहायता मिली।[10]

साम्यवाद के बारे में डॉ0 लोहिया को कोई भ्रम नहीं रहा। समाजवादी कहलाने वालों ने किसी भी दशा में अपने–अपने साम्राज्यों से हटना स्वीकार नहीं किया। यूरोपीय सभ्यता पर उनकी रही सही आस्था भी समाप्त हो गयी।[11]

समाजवाद एक ऐसा सपना है जिसने बीसवीं सदी में दुनिया को सार्वाधिक आन्दोलित एवं प्रभावित किया।

21वीं शताब्दी में दुनिया के अलग–अलग कोने में अलग–अलग ढंग से लोग इस लक्ष्य को हासिल करने के लिए जुझते रहेगें, इसमें शक नहीं है। जैसे ईश्वर प्राप्ति के लिए अलग–अलग मार्ग खोजे और बनाये जाते हैं वैसे ही विषमताओं का उन्नमूलन करके समता परक समाज व्यवस्था के निर्माण के लिए अलग–अलग ढंग से प्रयोग किये गये हैं लेकिन इन सबकी मूल प्रेरणा और लक्ष्य एक ही रहा है।

डॉ0 राम मनोहर लोहिया का अपना अप्रतिम स्थान एवं महत्व है। डॉ0 राम मनोहर लोहिया के समाजवाद की अपनी विशिष्टता एवं मौलिकता है, जो उन्हें अन्य चिन्तकों से पृथक्क करती है।

डॉ0 लोहिया अपने चिन्तन में स्वतंत्रात थे। वह किसी के विचारों के अनुकरण में विश्वास नहीं रखते थे। वह मौलिक चिन्तक थे। उन्होंने भारतीय दर्शन एवं धर्म की रूढ़िवादी परम्पराओं को स्वीकार नहीं किया। डॉ0 लोहिया वस्तुतः नास्तिक थे। ईश्वर और आत्मा परमात्मा में उनकी कोई आस्था नहीं थी। फलतः उन्होंने वेद शास्त्राों की अकाट्यता, वर्ण व्यवस्था, ईश्वर के अस्तित्व आत्मा की अमरता, स्वर्ग–नरक, पार लौकिकता और मोक्ष आदि को स्वीकार नहीं किया। उनका चिन्तन मानव की समस्याओं एवं कष्टों का अन्त करने तक सीमित रहा। मानवतावादी दृष्टि, विश्व समाजवाद, समान असंगति, सामाजिक समता, विचार एवं वाणी की स्वतंत्राता, कर्म का संयम्, वर्णाधारित व्यवस्था का विरोध, जाति प्रथा का अन्त चौखम्भा राज तथा प्रशासन आदि डॉ0 लोहिया के चिन्तन के मौलिक तत्व हैं। निश्चय ही डॉ0 लोहिया भारत के मौलिक सामाजिक एवं राजनीतिक विचारकों में प्रतिष्ठित स्थान रखते हैं।[12]

डॉ0 लोहिया विद्यार्थी जीवन से ही अनेक प्रकार के संगठनों से जुड़े रहे,सन् 1920 में लोक मान्य बाल गंगाधर तिलक की मृत्यु को उन्होंने गम्भीरतापूर्वक लिया और बम्बई के मारवाड़ी कालेज के अपने छात्रा साथियों द्वारा हड़ताल करवा कर उसका नेतृत्व किया। यहीं से लोहिया के संघर्षमय जीवन का आरम्भ हुआ। वस्तुतः वही वह क्षण था जब डॉ0 राम मनोहर लोहिया ने भारत की राजनीति में प्रवेश किया।[13]

डॉ0 राम मनोहर लोहिया का कार्यात्मक जीवन स्वतंत्राता के लिए संघर्ष एवं समाजवाद को अनुप्रयोग में लाने का था। सन् 1920 में वह राजनीति में सक्रिय हुए तथा साइमन कमीशन का विरोध किया। भारत में समाजवाद को नूतन आयाम देने के लिए सन् 1934 में कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के स्थापना सम्मेलन में भाग लिया। भारत की स्वतंत्राता के वे प्रबल पक्ष पोषक रहे। वह कांग्रेस पार्टी में भी सदैव सक्रिय रहे। 1936 में डॉ0 लोहिया ने कांग्रेस पार्टी के विदेश मंत्राी का पद सम्हाला डॉ0 लोहिया की गांधी एवं गांधी के विचारों में गहरी आस्था थी। वह गांधी से अपेक्षा रखते थे कि वह स्वतंत्राता आन्दोलन को छेड़ें, इसी निमित्त 1938 में इलाहाबाद से महात्मा गांधी को पत्रा लिखा।

सितम्बर में ही कांग्रेस रेडियों की स्थापना हुई। तीसरी पुस्तिका ''करो या मरो'' का प्रकाशन हुआ। नवम्बर में कांग्रेस रेडियों के भूमिगत कार्यालय पर पुलिस का छापा, लेकिन डॉ0 लोहिया बच निकले, कलकत्ता से फरार हो गये। इसी वर्ष दिसम्बर में नेपाल पहुँचे तथा जे0पी0 से मिले। 1949 में नेपाल के जंगलों मे पुनः कांग्रेस रेडियों की स्थापना की। भूमिगत स्थानों पर पुलिस का छापा पड़ा तथा डॉ0 लोहिया, जयप्रकाश नारायण के साथ बन्दी बना लिये गये। ''आजाद हिन्द'' के छापा मार दस्ते द्वारा जेल तोड़कर जय प्रकाश जय प्रकाश नारायण के साथ मुक्त कराये गये। नेपाल से कलकत्ता आये। 1944 में भूमिगत कार्यकत्ताओं का कलकत्ता में सम्मलेन हुआ। यहीं गिरफ्तारी हुई। गिरफ्तारी के बाद जेल की यातनाएं सहीं। लाहौर जेल में बन्दी प्रत्यक्षीकरण याचिका दायर की। 1945 में लाहौर जेल से आगरा जेल गये। इसी वर्ष डॉ0 लोहिया के पिता श्री हीरा लाला जी का कलकत्ता में निधन हो गया। यह वर्ष डॉ0 राम मनोहर लोहिया के लिए त्रासदी का वर्ष था।

संघर्ष की निरन्तरता के प्रतीक डॉ0 लोहिया 1946 में ''गोवा आन्दोलन'' आरम्भ किया। सिविल नाफरमानी करते हुए गिरफ्तार हुए।

21 जून को जेल से रिहा हुए, 29 सितम्बर को पुनः गिरफ्तार हुए, 18 नवम्बर को रिहा हुए।

डॉ0 लोहिया न केवल भारत के स्वतंत्राता संग्राम में संघर्षशील थे वरन् वह विश्व नागरिक चेतना के स्वतंत्राता के हामी थे। 1947 में नेपाली आन्दोलन में सम्मिलित हुए और गिरफ्तार हुए। इसी वर्ष 15 अगस्त को स्वतंत्राता दिवस पर निकाले गये जुलुस का नेतृत्व किया। 29 जनवरी 1948 को गांधी से अन्तिम मुलाकात की। नासिक फैसले के अनुसार कांग्रेस सदस्यता का परित्याग कर दिया। पनुः 1949 में नेपाल कांग्रेस के समर्थन में जुलूस निकालते हुए 25 मई को गिरफ्तार हुए। गिरफ्तार होकर स्टाक होम गये।

डॉ0 लोहिया की संवेदना में समाज के मेहनतकस जनता के प्रति सदैव सहानुभूति एवं लगाव बना रहा। इसी वर्ष डॉ0 लोहिया रीवां में कांग्रेस पंचायत में सम्मिलित हुए। 1950 कोरिया युद्ध के मसले पर जयप्रकाश नारायण एवं अशोक मेहता से मतभेद हो गया। फलतः उन्होंने सोशलिस्ट पार्टी के मद्रास अधिवेशन में न सम्मिलित होने का निर्णय लिया।

समाजवाद एवं उसके क्रियान्वयन के प्रति डॉ0 लोहिया चिन्तन एवं क्रियात्मक स्तर पर सदैव सजग रहे। 1951 में डॉ0 लोहिया ने रंगून में समाजवादी सम्मेलन में भाग लिया। इसी वर्ष किसान आन्दोलन में भाग लेते हुए गिरफ्तार हुए। रिहाई के बाद अन्तर्राष्ट्रीय समाजवादी सम्मेलन में भाग लिया। वर्ष 1952 में डॉ0 लोहिया विदेश यात्राओं पर निकल पड़े।

अमेरिका, यूगोस्लाविया, जापान, हांगकांग, थाईलैण्ड, इण्डोनेशिया की यात्राएं की। पंचमढ़ी में हुए समाजवादी सम्मेलन की अध्यक्षता की। सोशलिस्ट पार्टी एवं किसान प्रजा पार्टी में विलय की पहल की। डॉ0 राम मनोहर लोहिया चिन्तन तथा लेखन के स्तर पर समाजवाद के लिए सदैव जूझते रहे। 1953 में प्रजा सोशलिस्ट पार्टी के पांच आधारभूत सिद्धान्तों की रचना की तथा कांग्रेस के साथ साझा मंत्रिमंडल बनाने के प्रस्ताव की निन्दा की। 1954 में नहर रेट आन्दोलन चलाया और पन्द्रह कार्यकर्त्ताओं के साथ जेल गये। डॉ0 राम मनोहर लोहिया राजनीति में सदैव सत्य एवं

सैद्धान्तिकता के प्रति प्रतिबद्ध रहे हैं। वह सत्य को हमेशा प्रतिबद्धता से व्यक्त करते थे। निहत्थे मजदूरों पर गोली चलाने वाली केरल की पहली गैर कांग्रेसी सरकार से त्यागपत्रा मांगा। अन्य नेताओं से मतभेद हुए। प्रजा सोशलिस्ट पार्टी के महामंत्राी पद से इस्तीफा दिया। 1956 में लखनऊ में एक लाख किसानों के जुलूस का नेतृत्व किया। जयप्रकाश नारायण से मुलाकात की। ''मैन काइण्ड'' का प्रकाशन शुरू कराया, गिरफ्तार हुए। 1957 में चकिया चन्दौली से चुनाव लड़े और हारे। सिविल नाफरमानी करते हुए पांच हजार लोगों के साथ जेल गये। अंग्रेजों की मूर्तियां को हटाने का आन्दोलन चलाया। डॉ0 राम मनोहर लोहिया समाज की गत्यात्मकता एवं शिथिलता क्रमशः दोनों स्तरों पर सदैव सजग रहते थे। 1958 में द्रमूक नेता रामास्वामी नायकर पेरियार तथा अम्बेडकर को पत्रा लिखे। नायकर से भेंट की। नेफा में गिरफ्तार हुए।

देश की भाषा के प्रति डॉ0 लोहिया के मन में सम्मान एवं अनुराग की भावना थी। वह अंग्रेजी को साम्राज्यवाद एवं सामन्तवाद का पर्याय समझते थे। 1959 में हिन्दी में बहस की सुविधा न मिलने पर सुप्रीम कोर्ट को पत्रा लिखा। सुप्रीम कोर्ट ने उसे स्वीकार नहीं किया। 1960 में हरिजनों–गिरीजनों आदिवासियों का छः मास का लम्बा सत्याग्रह चलाया। चित्राकूट में रामायण मेला का आयोजन करने की घोषणा की। इसी वर्ष लोहिया ने समाजवादी ताकतों की एकता की अपील की। एथेन्स में आयोजित ''विश्व समाजवादी सम्मेलन'' में भाग लिया। ''सप्तक्रान्तियों'' की पुनः व्याख्या की। 1962 में पंडित जवाहर लाल नेहरू से फूलपुर संसदीय क्षेत्रा से संसदीय चुनाव हारे। हैदराबाद में तीसरा अंग्रेजी हटाओ आन्दोलन सम्मेलन आयोजित किया। चीनी आक्रमण के परिप्रेक्ष्य में पूरे देश का दौरा किया और सरकार की असफलता पर प्रकाश डॉला। 1963 में समाजवादी पार्टी तथा प्रजा समाजवादी पार्टी की एाकता की पहल की। फरूखाबाद से डेढ़ लाख से अधिक मतों से चुनाव जीतकर संसद में पहुँचे। 23 अगस्त को ''तीन आना बनाम बारह आना'' का ऐतिहासिक महत्व का लोकसभा में पहला भाषण दिया।

1964 में डॉ0 राम मनोहर लोहिया विश्व व्यापी दौरे पर गये। अमेरिका में रंगभेद कानून का उल्लंघन करते हुए गिरफ्तार हुए। लन्दन में भारतीय छात्राों को सम्बोधित किया। संयुक्त प्रजा सोशलिस्ट पार्टी का गठन कराया। वर्ष 1965 में पटना में बन्द का आयोजन किया। 25 नवम्बर को संसद घेरने की घोषणा की। पटना में गिरफ्तारी हुई। उच्चतम न्यायालय में अपने मुकद्दमें की स्वयम् बहस की। 1966 में बस्तर में आदिवासियों पर हुए जुल्म के खिलाफ संसद में जोशीला भाषण दिया। कलकत्ता में पुलिसा हिंसा का विरोध किया। उत्तर प्रदेश बन्द के सिलसिले में गिरफ्तार हुए। 1967 में फरूखाबाद संसदीय क्षेत्रा से चुनाव लड़ते हुए ''मुस्लिम पर्सनल ला'' का विरोध किया। हिन्दी भाषी क्षेत्राों में संविद सरकारों का गठन किया। 12 अगस्त 1967 को लोक सभा में अन्तिम भाषण दिया।[14]

डॉ0 राम मनोहर लोहिया ने 40 से अधिक ग्रन्थों का प्रणयन किया जिसमें समाजवाद की गवेषणा को गयी है। इन ग्रन्थों में समाजवाद के आर्थिक आधार, समाजवादी चिन्तन, नया समाज नया मन, समाजवादी एकता, जर्मन सोशलिस्ट पार्टी, मर्यादित उन्मुक्त और असीमित व्यक्तित्व और रामायण मेला, भाषा, इतिहास चक्र, धर्म पर एक दृष्टि, निजी और सार्वजनिक क्षेत्रा, भारत में समाजवाद, समाजवाद की अर्थ नीति, समाजवाद की राजनीति, समाजवादी आन्दोलन का इतिहास, सरकारी मठी और कुजात गांधीवादी, अर्थशास्त्रा मार्क्स से आगे, मार्क्स गांधी एण्ड सोशलिज्म, इण्टरवल ड्रिंग पालटिक्स, द कास्ट सिस्टम तथा गिल्टी मैन आफ इण्डियाज पार्टीशन महत्वपूर्ण हैं।[15]

संसद के बाहर भी डॉ0 लोहिया सक्रिय रहे। उन्होंने भारतीय राजनीति को तीव्र किया। अंग्रेजी हटाओ, दाम बांधो, जाति तोड़ो, हिमालय बचाओ, कांग्रेस हटाओं देश बचावो, जैसे नारे दिये और आन्दोलनों का संचालन किया।

संसद में प्रवेश के उपरान्त उनकी कुशाग्र बुद्धि, तीखी आलोचना तथा विद्रोही व्यक्तित्व का भली भांति परिचय हुआ। उनके विचार विवादास्पद बने रहे परन्तु उन्होंने जाति–प्रथा आर्थिक शोषण, धर्मान्तरण, जमींदारी प्रथा बाल विवाह पर कड़े प्रहार किये। कुछ परम्परावादी तत्व उनसे नाराज हुए परन्तु सामान्य जन ने उनका खूब साथ दिया।

1946 में विश्व भ्रमण करने के पश्चात् डॉ0 लोहिया ने महंगाई, भ्रष्टाचार, भाई भतीजावाद, लालफीताशाही के विरूद्ध आन्दोलन चलाये, बन्द के आवाÐन किये। भारतीय समाज में ये समस्याएं किसी न किसी रूप में आज भी जीवन्त हैं। यह डॉ0 राम मनोहर लोहिया के दूर दृष्टि का परिचायक है।[16]

पीड़ित उपेक्षित वर्गों के हिमायती, अविचलित उत्साह, धैर्य, निष्ठा, तपस्वी एवं त्यागी व्यक्तित्व के धनी लौह पुरूष का दिल्ली में 12 अक्टूबर 1967 को मृत्यु हो गयी। पारिवारिक बन्धनों से मुक्त डॉ0 लोहिया जीवन पर्यन्त अविवाहित रहे तथा फक्कड़ एवं घुमक्कड़ बने रहे। वे जन्मतः समाजवादी और विद्रोही रहे। उनका समस्त दर्शन ''जनतांत्रिाक मानवतावाद'' की अभिव्यक्ति है।

## सन्दर्भ ग्रन्थ


1. आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिन्तनः– पुरूषोत्तम नागर पृष्ठ संख्या 709 राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, पंचम संस्करण, 1994।
2. उपर्युक्त।
3. लोहिया : ओंकार शरद, पृष्ठ संख्या 4।
4. भारत विभाजन के अपराधी : डॉ0 राम मनोहर लोहिया। पृष्ठ संख्या 91,
5. समाजवादी दर्शन एवं डॉ0 लोहिया : लक्ष्मी कान्त वर्मा पृष्ठ 25, सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग उत्तर प्रदेश, लखनऊ 1991।
6. आधुनिक भारत का राजनीतिक चिन्तन : वी0पी0 वर्मा, पृष्ठ संख्या 54। लक्ष्मी नारायण अग्रवाल प्रकाशन आगरा, 1971।
7. समाजवादी दर्शन और डॉ0 लोहिया : लक्ष्मीकान्त वर्मा, पृष्ठ संख्या 25।
8. समाजवादी दर्शन और डॉ0 लोहियाः लक्ष्मीकान्त वर्मा, पृष्ठ संख्या 202–203।
9. लोहिया का समाजवादी दर्शन : ताराचन्द दीक्षित, पृष्ठ संख्या 222।
10. मर्यादित, उन्मुक्त और असीमित व्यक्तित्व और रामायण मेलाः– डॉ0 राम मनोहर लोहिया, पृष्ठ संख्या 1–2। समता विद्यालय न्यास, हैदराबाद, 1962।
11. दिनमान, 16 अक्टूबर 1977 का अंक, पृष्ठ 12।
12. आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिन्तन : डॉ0 पुरूषोत्तम नागर, पृष्ठ संख्या 711।
13. आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिन्तन : डॉ0 पुरूषोत्तम नागर पृष्ठ संख्या 709।
14. समाजवादी दर्शन एवं डॉ0 लोहिया : लक्ष्मीकान्त वर्मा, पृष्ठ संख्या 285–288।
15. आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिन्तन : डॉ0 पुरूषोत्तम नागर, पृष्ठ संख्या 711–712।
16. आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिन्तन : डॉ0 पुरूषोत्तम नागर, पृष्ठ संख्या 712।